International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 07, July 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिंदी: संस्कृत से सोशल मीडिया तक

मनीष कुमार मिश्रा, शोधार्थी
रांची विश्वविद्यालय, रांची

सारांश

संस्कृत से सोशल मीडिया की भाषा बन जाने वाली हिंदी की विकास यात्रा बहुत रोचक है । हिंदी की विकास यात्रा में समय - समय पर क्षेत्र, जाति, संप्रदाय, परिवेश,व्यक्ति, संस्था आदि के प्रभाव ने इसके स्वरूप बदला परंतु बदले वक्त एवं आकार से इसने स्वयं का श्रृंगार कर वैश्विक भाषाई प्रतिस्पर्धा की दौड़ में खड़ी हुई परिणामस्वरूप आज हिंदी विश्व की अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल है। हिंदी ने आधुनिक तकनीकों के साथ मधुर संबंध स्थापित कर लिया। मशीनी युग के अनुरूप स्वयं को ढाल लिया है। आज जब मोबाइल फोन पर पूरी दुनिया सिमट चुकी है एक क्लिक में सूचनाओं का समंदर सामने खुल जाता है ऐसे में वो हिंदी जो कभी महज एक बोली (खड़ी बोली) की संज्ञा में सिमटी हुई थी आज अंतराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित हो रही है।

प्रस्तावना

सैकड़ों वर्षों से जिस किसी को भी जनसंपर्क करने की आवश्यकता हुई चाहे वह शासक हो धार्मिक व सामाजिक नेता हो चाहे लेखक हो उसने हिंदी का उपयोग किया। आदिकाल का सारा हिंदी साहित्य हिंदी प्रदेश के बाहर रचा गया। नाथ साहित्य पश्चिम में सिद्ध साहित्य और ब्रजबुली (ब्रजभाषा और बांग्ला मिश्रित साहित्य) पूर्व में आदि भक्ति साहित्य महाराष्ट्र गुजरात में एवं बहुत सारे कृष्ण भक्ति काव्य उड़िया और नेपाली में लिखा गया। युग- युग से तीर्थयात्रियों, व्यापारियों और कलाकारों की भाषा हिंदी रही है। सारे भारत में राग- रागिनी की भाषा सदा से ब्रजभाषा रही है। कबीर, तुलसी और सूर की वाणी आज लोगों कंठों से प्रतिध्वनित हो रही है जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है। मुसलमानों के आरंभिक काल से लेकर शासन में हिंदी सर्वमान्य थी उनके सिक्कों पर सारी सूचना हिंदी में रहती थी। शाही फरमान में भी हिंदी का प्रयोग होता था। मुगल काल में भले ही फारसी राजभाषा हो गई किंतु हिंदी का प्रयोग शासन में वैकल्पिक रूप से होता रहा क्योंकि जनता में हिंदी ही सर्वदेश की भाषा थी। हिंदी साहित्य की ओर से इस भाषा के विकास क्रम का अवलोकन करेंगे तो हम देखते हैं की बौद्ध जैन आदि धर्मों के ग्रंथों से लेकर बड़े- बड़े राजदरबारों में हिंदी की खनक सुनाई देती है। वीरता का बखान करना हो या राजाओं का यशगान हिंदी हर रंग में ढली। आगे भक्ति काल में हिंदी फकीरों साधुओं की वाणी , और विचारपूर्ण महाकाव्यों की भाषा बनी अनेक मतों एवं संप्रदायों के सारतत्व हिंदी में अभिव्यक्त हुए। रितिकाल की हिंदी ने नायिकाओं के नख- शिख वर्णन से लेकर साहित्य के लक्षण ग्रंथो,विरह वेदना , प्रेम तथा श्रृंगार आदि भावों को अभिव्यंजीत किया। आधुनिक काल आते आते अपने सबसे अध्ययन रूप खड़ी बोली के रूप में हिंदी को नवजीवन मिला। अंग्रेजों के भारत में काबिज हो जाने के बाद खासकर 1813 ईसवी में विल्फर्स एक्ट पास होने के बाद ईसाई

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 07, July 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पादरियों को भारत में ईसाई धर्म के प्रचार करने की पूरी छूट मिली। इन धर्म प्रचारकों ने बाइबल के संदेशों के हिंदी अनुवाद को भारत के गांव - गांव तक पंहुचाया हालाकि इनका उद्देश्य भाषा प्रचार नहीं धर्मप्रचार था परंतु इससे अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी का भी प्रचार हुआ।

इधर 1800 ईस्वी में लार्ड वेलेजली द्वारा फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हिंदी भाषा एवं साहित्य के लिए मिल का पत्थर साबित हुआ। हिंदी के साथ भारतीय भाषाओं के विकास में सदल मिश्र, लल्लू लाल, ईश्वरचंद विद्यासागर आदि विद्वानों ने इस कॉलेज के हिंदुस्तानी भाषा के विभागाध्यक्ष गिलकृष्ट का भरपूर साथ दिया।

हिंदी के नवोत्थान में व्यक्तिगत प्रयास ने ही सामूहिक प्रयास की आधारशीला रखी। भारतेंदु ने तत्कालीन हिंदी प्रेमियों को प्रभावित कर भावी पीढ़ियों के लिए भी जमीन तैयार किया। भारतेंदु वैसे कर्मयोगी थे जिन्होंने अपना सर्वस्व हिंदी को समर्पित कर दिया। उनके नाटकों में अभिनय करने का किस्सा विश्वप्रसिद्ध है। हिंदी के कई विधाओं को जन्मदाता भारतेंदु देश में घूम - घूम कर हिंदी का प्रचार किया करते थे बलिया के एक जनसभा में उनके द्वारा पढ़ा गया एक दोहा बहुत मशहूर हुआ- ' निज भाषा उन्नति के मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय के शूल'

भारतेंदु ने हिंदी की सेना के रूप में अपनी मंडली तैयार की थी जिसमें बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी,श्रीनिवास दास, ठाकुर जगमोहन सिंह,दुर्गाप्रसाद मिश्र,अंबिकादत्त व्यास,बद्री नारायण चौधरी प्रेमघन,सुधाकर द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त,काशीनाथ खत्री आदि शामिल थे। इनमें से कई विद्वान विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से भी हिन्दी हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना योगदान दे रहे थे । जिसमें स्वयं भारतेंदु ने 'बाला बोधिनी' 'हरिश्चंद्र मैगजीन' और 'कविवचन सुधा' आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिंदी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले इसी ' चंद्रिका' में प्रकट हुआ स्वयं भारतेंदु ने भी नई चाल की हिंदी का उदय इसी समय माना है। बालकृष्ण भट्ट का 'हिंदी प्रदीप' तथा प्रताप नारायण मिश्र की ब्राह्मण पत्रिका आदि। इन पत्रिकाओं में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित रचनाओं को प्रकाशित किया जाता था । ऐसी पत्रिकाएं हिंदी पट्टी के रचनाकारों के लिए एक सशक्त मंच के रूप में सामने आया, एक ऐसा मंच जिसने हिंदी प्रतिभाओं को तराशने का काम किया। 1900 ईस्वी में बाबू श्याम सुंदर दास के संपादकत्व में निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती ' हिंदी के लिए वरदान सिद्ध हुई। 1903 ईस्वी में जब आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस पत्रिका की कमान संभाली तो ये हिंदी भाषा एवं साहित्य दोनों के लिए क्रांतिकारी युग साबित हुआ। द्विवेदी जी ने यह कार्य सरस्वती पत्रिका के माध्यम से किया भारतेंदु युग के लेखकों की गद्य में ब्रज भाषा के प्रयोग भी आ गए थे तथा दूसरी और कुछ लोगों ने फारसी शब्दों वाली हिंदी का भी प्रयोग कर रहे थे कुछ साहित्यकार ऐसे भी थे जिन्होंने मनमाने ढंग से नए नए शब्दों को घेर लिया था और साहित्य में प्रयोग करना आरंभ कर दिया था। द्विवेदी जी के सामने सबसे बड़ी समस्या यही थी कि वह हिंदी की इस अराजकता पूर्ण स्थिति से कैसे निपटें और उसे परिमार्जित कर एकरूपता की दिशा में कैसे आगे ले जाएं भारतीय तू युगीन भाषा के मनमाने अनियमित और क्षेत्रीय प्रयोगों को ठीक करके भाषा को सुव्यवस्थित बनाना द्विवेदी जी के सम्मुख उस समय की सबसे बड़ी चुनौती थी द्विवेदी जी ने हिंदी तथा हिंदी साहित्य को दो महत्वपूर्ण देन है। एक उन्होंने लोगों को ब्रजभाषा के स्थान पर खली बोली में कविता लिखने की प्रेरणा दी और हिंदी कविता

भी गद्य के साथ साथ खड़ी बोली में लिखी जाने लगी दूसरा सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा का परिमार्जन एवं सुधार किया सरस्वती पत्रिका में छपने के लिए जो लेख आते थे उसमें भाषा व्याकरण तथा वर्तनी आदि की अनेक अशुद्धियां होती थी। द्विवेदी जी रात रात भर बैठ कर इन लेखों की भाषा स्वयं सुधारा करते थे और लोगों को सही भाषा लिखने की प्रेरणा देते थे उन्होंने स्वयं ऐसे लेख लिखिए जिनके माध्यम से उन्होंने व्याकरण वर्तनी विराम चिन्हों आदि का आदर्श रूप जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया । द्विवेदी युग में अगर किसी रचनाकार की रचना अगर सरस्वती पत्रिका में छप जाती तो वो रचनाकार सर्वमान्य हो जाता। ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा खेलकूद आदि से संबंधित विषयों पर व्यवस्थित विचार प्रस्तुत करने के लिए अन्य भाषाओं जैसे मंगला मराठी गुजराती अंग्रेजी संस्कृत आदि के शब्द रहित किया और हिंदी को समर्थ बनाने का प्रयास किया भारतीयों से हिंदी का संबंध एक प्रकार से कट गया था उसे उन्होंने पुनः स्थापित किया। हिंदी भाषा को परिष्कृत परिमार्जित करने में जो भूमिका द्विवेदी जी ने निभाई वो अविस्मरणीय है।

हिंदी के वर्तमान स्वरूप के निर्माण में इन साहित्यिक पत्रिकाओं के योगदान को भुलाना असंभव है। इसी कड़ी में पुरस्कारों एवं उनसे जुड़ी संस्थाओं की भूमिका को भी नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। 1910 में मंगला प्रसाद पारितोषिक 1938 में साहित्य वाचस्पति, उत्तर प्रदेश से हिंदी साहित्य सम्मेलन मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन भोपाल, हरियाणा प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, हिंदी साहित्य सम्मेलन गुडगांव, मुंबई प्रांतीय साहित्य सम्मेलन,दिल्ली प्रांतीय साहित्य सम्मेलन, दिल्ली साहित्य सम्मेलन,साहित्य सम्मेलन रीवा, ग्रामोत्थान विद्यापीठ मैसूर, हिंदी प्रचार परिषद बेंगलुरु, मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर, भारतेंदु समिति कोटा राजस्थान तथा साहित्य सदन अबोहर, हिंदुस्तानी प्रचार सभा वर्धा, केरल हिंदी प्रचार सभा तिरुअनंतपुरम, हिंदी विद्यापीठ मुंबई आदि ये ऐसी संस्थाएं हैं जो समय- समय पर उत्कृष्ट रचनाओं के साहित्यकारों को सम्मानित करके हिंदी लिखने वालों के हृदय में हिंदी के प्रति लगाव जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देने का काम करते हैं।

सामाजिक संगठनों ने भी अपने स्तर पर हिंदी के उत्थान में काम किया इनमें से प्रमुख हैं- ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थियोसॉफिकल सोसायटी, सनातन धर्म सभा, रामकृष्ण मिशन आदि शामिल हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विदेशी राज्यों के विरोध के साथ विदेशी वस्तुओं का भी बहिष्कार होने लगा और स्वदेशी की भावना तीव्र होती गई विदेशी भाषा का बहिष्कार और स्वदेशी भाषाओं का प्रचार व्यापक रूप से होने लगा हिंदी के माध्यम से ही जनता में राष्ट्रीय स्वाधीनता की आकांक्षा फैली तब सभी नेता हिंदी के समर्थक थे तिलक अरविंद घोष सरदार वल्लभभाई पटेल आदि सभी ने राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अपने स्तर पर योगदान किया यहां तक कि दक्षिण के सी राजगोपालाचारी विजया राघवा चार्य रामास्वामी अय्यर आदि नेताओं ने हिंदी की जोरदार वकालत की स्वाधीनता आंदोलन के लेखकों और पत्रकारों ने भी इस दिशा में काफी कार्य किया स्वाधीनता प्राप्ति तक हिंदी की जो उपलब्धि है वह उसकी सर्वदेशिता उसके राष्ट्रभाषा होने के प्रमाण हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में आजादी के लिए संघर्षरत नेताओं ने देश में एक भाषा की कमी को महसूस किया। करोड़ों भारतीयों पर चंद अंग्रेजों का राज करना संभव हो पा रहा था क्योंकि भारतीय जनमानस कई आधारों पर बंटा था इस वैचारिक बंटवारे का एक आधार भाषा भी थी और अंग्रेजों की ओर से भारत के भाषाई विद्वेष की आग

में घी डालने का काम लगातार किया जा रहा था ताकि उनका स्वार्थ साधता रहे और वे आसानी से भारत का औपनिवेशिक दोहन करते रहें परंतु एशिया के बाहर कई देशों में हुई क्रांति ने वैश्विक चेतना की बैट्री को चार्ज करने का काम किया और लोगों ने अपनी बड़ी कमी को पहचान कर इसमें काम करना शुरू किया। इसमें कई ऐसे स्वतंत्रता सेनानी हुए जो हिंदी भाषी न होते हुए भी हिन्दी के उत्थान के लिए लगातार संघर्षरत रहे जिसमें बड़ा नाम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का है। उनके साथ पुरुषोत्तम टंडन, सुभाषचंद्र बोस, आचार्य नरेंद्र देव, काका कालेलकर ,सेठ जमुना लाल बजाज, बाबा राघवदास,श्री शंकर देव, बृजलाल वियानी आदि ने हिंदी उत्थान में बढ़ चढ़ कर योगदान दिया। बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र से भारतीय भावना को उद्धृत किया और भारतवासियों से आग्रह किया कि यह हिंदी सीखें उन्होंने लिखा- ' राष्ट्र के संगठन के लिए आज ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे सर्वत्र समझा जा सके किसी जाति को निकट लाने के लिए भाषा का होना महत्वपूर्ण तत्व है एक भाषा के माध्यम से ही आप अपने विचार दूसरे पर व्यक्त कर सकते हैं।'

तिलक के ही उत्तराधिकारी एन.सी केलकर ने लिखा कि ' ' मेरी समझ में हिंदी भारतवर्ष की सामान्य भाषा होनी चाहिए यानी समस्त हिंदुस्तान में बोली जाने वाली भाषा होनी चाहिए प्रांतीय कार्यों के लिए तो प्रांतीय भाषाएं ही चले लेकिन एक प्रांत दूसरे प्रांत से मिले तो परस्पर विचार विनिमय का माध्यम हिंदी होनी चाहिए इस विषय में कोई प्रांतीय भाषा हिंदी का स्थान नहीं दे सकती "

हिंदी के विकास में पंजाब प्रांत काफी बड़ा योगदान रहा है जब पंजाब में रियासतें थी तो हिंदी कवियों और हिंदी के विद्वानों ने हिंदी के प्रचार प्रसार में काफी योगदान किया था इसके अलावा सिख संप्रदाय के गुरु हिंदी के पक्षधर रहे बाद में सनातन धर्म का आंदोलन प्रमुखता है हिंदी माध्यम संहिता सनातन धर्म सभा ने रात्रि पाठशाला में स्कूलों कॉलेजों के रूप में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार किया और फिर यही कार्य किया आर्य समाज में महर्षि दयानंद इन सब में अग्रणी से जन्म से गुजराती ऋषि दयानंद सरस्वती ने हिंदी के राष्ट्रीय महत्व को पहचानते हुए राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया राष्ट्रीय जागरण का संदेश राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से फैलाया। इसके द्वारा स्थापित स्कूल तथा कॉलेजों में हिंदी की प्रधानता थी धार्मिक आधार पाकर हिंदी भाषा का प्रवाह महिलाओं में भी हुआ लाला लाजपत राय जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने स्वयं हिंदी सीख कर पंजाब के लोगों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया पंजाब केसरी के रूप में प्रसिद्ध लालाजी ने राष्ट्रीय शिक्षण विद्यालयों के द्वारा बहुत से बलिदानी प्रचारक तैयार किए जो राष्ट्रीय आंदोलन में चलने वाला स्वतंत्रता संघर्ष की गतिविधियां हिंदी में की जाती थी यहां के नेता अपने भाषण अपनी वार्ता अपनी चर्चा हिंदी में करते थे पंजाब में आयोजित होने वाले प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिंदी के आंदोलन में पंजाब के योगदान विशेष का लाला लाजपत राय का अविस्मरणीय है उल्लेखनीय है कि पंजाब में जब hindi-urdu विवाद चल रहा था तब लालाजी ने हिंदी का पक्ष लिया था और ही परिणाम है कि पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिंदी को स्थान मिला है लाला जी की प्रेरणा से पंजाब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में स्थन मिला।महाराष्ट्र के ही डॉक्टर भंडारकर का भी यही मत था कि ' ' भिन्न-भिन्न प्रदेशों की एक सामान्य भाषा बनने का सम्मान हिंदी को मिलना ही चाहिए' इसके अतिरिक्त सावरकर गोखले

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 07, July 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गार्ड के काका कालेलकर आदि नेताओं ने महाराष्ट्र को जो नेतृत्व प्रदान किया महाराष्ट्रीय लोग आज भी उसका अनुसरण करते हुए हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

महात्मा गांधी अपने आंदोलनों में लगातार हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए आवाहन कर रहे थे। कांग्रेस में उनके प्रभाव के कालखंड में हिंदी के कायाकल्प के लिए काम शुरू हुआ। कई कांग्रेस अधिवेशन इसके साक्षी रहे हैं। इस क्रम में कांग्रेस के 40वें अधिवेशन 1925 में हिंदी संबंधित प्रस्ताव पारित किया गया। 1936 के फैजपुर अधिवेशन में डॉ राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया

महात्मा गांधी ने कहा है 'अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है और हिंदी उस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।' निःसंदेह गांधी जी ने वक्त की मांग को भाप कर हिंदी की आवश्यकता को समझा और इसके लिए व्यक्तिगत तथा स्वयं से जुड़े सामाजिक राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी की सिफारिश की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के राजनेताओं को को ऐसा लगने लगा कि विदेशी भाषा भी गुलामी का ही परिचायक है और राष्ट्रभाषा जो अपनी भाषा हो इसे बनाने की कवायद शुरू हुई।

स्वतंत्र भारत के संविधान में संघ सरकार को हिंदी के प्रचार प्रसार के दायित्व तथा विकास की दिशा का संकेत देते हुए कहा गया है कि ' जहां आवश्यक हो वहां हिंदी के शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा कोणता अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा' इसी दिशा निर्देश के अनुसार 1950 में एक वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली बोर्ड गठित किया गया। नेताओं ने संविधान सभा के माध्यम से सरकारी कामकाज एवं शिक्षा के माध्यम के रूप में देश भाषा की अनिवार्यता मानते हुए इस कमी को हिंदी में पूरा करने का प्रयास किया। लेकिन यहां दूरदर्शिता की कमी कहें या कुछ और राष्ट्र निर्माताओं से थोड़ी भूल हुई से लोग प्रशासन की स्वदेशी पद्धति लागू करने की अनुशंसा नही किया।इसका परिणाम यह हुआ किनांगरेजी माध्यम से प्राप्त ज्ञान विज्ञान और अंग्रेजी को ही विश्वभर के ज्ञान की एकमात्र खिड़की समझने वाली प्रवृति हमारी आदत में शामिल हो गई।

भारत के राष्ट्रपति ने 1955 में यह आदेश जारी किया कि जनता के साथ पत्र व्यवहार में प्रशासक के रिपोर्टों प्रस्तावों सरकारी संधि पत्रों और करारनामा अंतर्राष्ट्रीय कार्यों और व्यवहारों तथा संसदीय विधियों में हिंदी का प्रयोग को अंग्रेजी के साथ बढ़ावा दिया जाए इसके बाद राष्ट्रपति ने संविधान की धारा 344 के तहत एक राजभाषा आयोग की नियुक्ति 1955 में किस में 21 सदस्य थे राजभाषा हिंदी के प्रयोग के बारे में आयोग का मुख्य सुझाव निम्नलिखित था हिंदी का ज्ञान आवश्यक होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में विदेशी भाषा का व्यवहार उचित नहीं है परिभाषिक शब्दावली के निर्माण की गति तीव्र होनी चाहिए 14 वर्ष की उम्र तक भारत के प्रत्येक विद्यार्थी को हिंदी का ज्ञान करा देना चाहिए संसद और विधान मंडलों में हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं का व्यवहार होना चाहिए हिंदी के विकास का उत्तरदायित्व निकालना चाहिए।

हिंदी के तकनीकी पक्ष को विकसित करने में शब्दकोश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है संस्कृत के अमरकोश और उस सर्व संग्रह की परंपरा के अनेक गोश्त विभिन्न स्तरों पर तैयार हुए मध्य युग में महाराजा शिवाजी के शासन

काल में पंडित रघुनाथ नामक विद्वान ने प्रशासन खाद्य सामग्री रक्षा व्यवस्था आदि विषयों से संबंधित लगभग डेढ़ हजार शब्दों का एक कोष तैयार किया था जो तत्कालीन प्रशासन के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ 1848 इसवी में ऑफिसर डेक्कन कोर्स ने हिंदी - अंग्रेजी- हिंदी कोश छापा। हिंदी की प्रशासनिक शब्दावली से संबंधित ग्रंथ एचएल विल्सन ने 1855 ईस्वी में डगलासरी ऑफ जुडिशल एंड रिवेन्यू टर्म्स नामक ग्रंथ लंदन से प्रकाशित किया सन 1913 ईस्वी में इलाहाबाद में विज्ञान परिषद नामक संस्था की स्थापना हिंदी के माध्यम से विज्ञान की जानकारी जनसाधारण को देने के उद्देश्य से की गई। "हिंदी में समस्या है पाश्चात्य जगत में विकसित आधुनिक ज्ञान विज्ञान को व्यक्त करने वाली परिभाषिक शब्दावली का हिंदी में न होना"-डॉ अवधेश अरुण(अनुवाद विज्ञान, डॉ बालेंदु शेकर तिवारी)हिंदी के कायाकल्प में संस्थागत प्रयत्नों के आरंभ की अगर बात की जाए तो इसकी शुरुआत कोलकाता से हुआ लेकिन उस स्तर तक पूरा नहीं हो पाया इसके बाद नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा यह काम किया गया इससे भी महत्वपूर्ण कार्य इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ इंडियन कल्चर लाहौर द्वारा किया गया इस ने दी ग्रेट इंग्लिश इंडियन डिक्शनरी का प्रकाशन किया जिसके संपादक थे डॉ रघुवीर अगर विश्वविद्यालय स्तर पर इस प्रयास की बात की जाए तो सबसे पहले उस्मानिया विश्वविद्यालय ने काम किया अरबी फारसी के आधार पर उर्दू का एक महत्वपूर्ण पारिभाषिक कोर्स तैयार करवाया सन 1920 के आसपास गुजरात विद्यापीठ द्वारा भी भौतिकी रसायन विषयों के कोर्स तैयार कराए गए।

इसी क्रम में 1952 में शिक्षा मंत्रालय ने हिंदी अनुभाग की स्थापना की जिसके बाद में हिंदी प्रभाव का दर्जा दिया गया इसके द्वारा तकनीकी शब्दावली के कई संग्रह तैयार किए गए और विषय अनुसार अलग-अलग विशेषज्ञ समितियों ने उनकी प्रमाणिकता की पुष्टि की इस ने हिंदी को वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा के रूप में विकास के लिए अनेक योजनाएं हाथ में किया जिसमें नागरिक टंकण यंत्र के मानक कुंजीपटल के निर्माण और वर्तनी के मानकीकरण की प्रक्रिया भी शामिल थी तकनीकी शब्दावली के निर्माण में 1960 में स्थापित केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने महत्वपूर्ण कार्य किया। सन 1955 में बिहार विधानसभा के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण सुधांशु के संपादन में ' राजकीय प्रशासन शब्दावली' जिसके वृहद संस्करण का पहला खंड सन 1970 में और दूसरा खंड सन 1976 में प्रकाशित हुआ। सन 1962 में उत्तर प्रदेश ' प्रशासन शब्दकोश' का प्रकाशन हुआ। मध्यप्रदेश में क्रमशः ' प्रशासन शब्दकोश' ' शासन शब्द प्रकाश' एवं ' हिंदी सहायिका' नामक ग्रंथ प्रकाशित हुए राजस्थान सरकार ने 1997 में ' हिंदी प्रयोग मार्गदर्शिका' प्रकाशित की। हिमाचल प्रदेश और हरियाणा में भी प्रशासनिक शब्दकोश प्रकाशित हुए।

हिंदी को सुगठित तथा आसान बनाने में तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग की भूमिका महत्वपूर्ण है कि आयोग ने पहली बार यह सुझाव दिया था कि अंतरराष्ट्रीय शब्दों को यथावत स्वीकार किया जाए जैसे उसने हाइड्रोजन ऑक्सीजन आदि तत्वों के नाम को यथावत ले लेने के लिए कहा।

यहां यह भी बताना आवश्यक है कि तकनीकी विकास के क्रम में हिंदी ने तकनीक के साथ भी कदमताल किया है। देवनागरी लिपि के टाइप का विकास चार्ल्स विलकिंस और पंचानन कर्मकार के द्वारा 1770 में किया गया टाइप के विकास के बाद ही हिंदी में पुस्तकों पत्रिकाओं समाचार पत्रों की बाढ़ सी आ गई आज हिंदी के प्रयोग

रेडियो टेलीविजन कार्यक्रम में हो रहा है अनेक कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीक से संबंधित होते हैं इन कार्यक्रमों में हिंदी के प्रचार प्रसार में अंकन मशीनों अर्थात टाइपराइटर का बड़ा योगदान है। इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर इलेक्ट्रॉनिक टेलीप्रिंटर और कंप्यूटरों का प्रयोग बड़ा है इन नवीन तकनीकों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने पहल की है और इसके लिए देवनागरी कुंजीपटल तैयार किए गए हैं हिंदी के कंप्यूटर सिद्धार्थ का विकास किया गया है सीएससी हैदराबाद में लिपि नामक एक त्रिभाषी शब्द संसाधन का विकास किया है। यह वर्ड प्रोसेसर हिंदी अंग्रेजी और अन्य प्रमुख भाई भारतीय भाषाओं में काम करता है। भारत में कंप्यूटर बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक के आसपास आया हिंदी का पहला कंप्यूटर सिद्धार्थ नौवें दशक के शुरू में नई दिल्ली में आयोजित तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान सन 1984 ईस्वी में सामने आए इसका विकास आईआईटी कानपुर ने किया था यह के वैज्ञानिकों ने जिस ग्राफिक्स इंडियन स्क्रिप्ट मिनल कार्ड नामक वैज्ञानिक तकनीक का विकास किया जिससे कंप्यूटर हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में काम करता था जस्ट कार्ड को कंप्यूटर के सीपीयू में लगा देने पर अंग्रेजी में काम करने वाला कंप्यूटर बहुभाषिक हो जाता है सीडैक पुणे टैग पद्धति पर आधारित कंप्यूटर पर अंग्रेजी हिंदी अनुवाद विधि का विकास कर लिया है इसके अलावा आज कंप्यूटर पर काम करने के लिए हिंदी के अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध है जिसमें अक्षर आलेख शब्द वाला शब्द रत्न चाणक्य भाषा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं हाल ही में आईबीएम टाटा कंपनी ने हिंदी दोस्त नामक तकनीक का विकास किया है जिसमें कमांड और मैन्यू भी हिंदी में हैं । साथ ही एंड्रॉयड एवं अनेक ऐसे एप्लीकेशंस हैं जिनके माध्यम से हिंदी आज सुगम सरल हो गई है। सोशल मीडिया के बढ़ रहे प्रचलन में हिंदी ने एक नया रूप धारण किया है हिंदी का यह नया अवतार आप सहज महसूस कर सकते हैं फेसबुक इंस्टाग्राम ट्विटर आदि ऐसे प्लेटफार्म है जहां आप हिंदी में अपनी भावनाएं आसानी से अभिव्यक्त कर पाते हैं।

अतः इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्तिगत तथा संस्थागत प्रयासों ने वैदिक संस्कृत से चलकर खड़ी बोली बनने वाली हिंदी को आज की ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग होने वाली हिंदी बनाया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. हिंदी भाषा- डॉ भोलानाथ तिवारी
2. हिंदी भाषा - महावीर प्रसाद द्विवेदी
3.हिंदी भाषा - डॉ हरदेव बाहरी
4. अनुवाद विज्ञान - डॉ बालेंदु शेखर तिवारी